उत्तराखण्ड मध्यकालिक राजकोषीय नीति, 2008

वित्त विभाग
उत्तराखण्ड शासन
देहरादून।

अध्याय–1

प्रस्तावना

राज्य विधान सभा द्वारा अक्टूबर, 2005 में पारित उत्तराखण्ड राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबन्धन अधिनियम 2005 की धारा–3 के अनुक्रम में राज्य सरकार विधान सभा के समक्ष वार्षिक बजट के साथ प्रत्येक वित्तीय वर्ष में मध्यकालिक राजकोषीय नीति प्रस्तुत करेगी। इस मध्यकालिक राजकोषीय नीति में विहित राजकोषीय सूचकों के लिए अन्तर्निहित धारणाओं के विनिर्देश के साथ त्रिवर्षीय चल लक्ष्य उपवर्णित किये जायेंगे।राजस्व घाटे, राजकोषीय घाटा एवं लोक ऋण के सन्दर्भ में उक्त अधिनियम राज्य सरकार से निम्न अपेक्षायें करता है :–

1–एक अप्रैल,2005 से प्रारम्भ होने वाले और 31 मार्च, 2009 को समाप्त होने वाले चार वित्तीय वर्षों की अवधि के भीतर राजस्व घाटा शून्य किया जाना।

2– वर्ष 2008–09 के अन्त तक राजकोषीय घाटा/सकल राज्य घरेलू अनुपात को तीन प्रतिशत से नीचे लाना।

3– 1 अप्रैल, 2005 से प्रारम्भ होने वाले और 31 मार्च, 2015 को समाप्त होने वाले दस वित्तीय वर्षों की अवधि के भीतर सुनिश्चित करेगी कि वित्तीय वर्ष 2014–15 की समाप्ति पर कुल दायित्व, उस वर्ष के लिए प्राक्कलित सकल राज्य घरेलू उत्पाद के पच्चीस प्रतिशत से अधिक न हो।

आर्थिक परिदृश्य

उत्तराखण्ड के सकल राज्य घरेलू उत्पाद के अनुमान सांख्यिकीय संगठन, भारत सरकार के दिशा निर्देशों के अन्तर्गत नये आधार वर्ष 1999–2000 को अपनाते हुये अनुमानित किये गये है। पूर्व में पूर्व आधार वर्ष 1993–94 के अनुसार तैयार किये गये अनुमानों में राज्य सृजन से पूर्व वर्षो के विभिन्न विभागों के आंकड़े उपलब्ध न होने के कारण कतिपय आर्थिक क्षेत्रों में अभिभाज्य उत्तर प्रदेश के कुल अनुमानों को श्रम शक्ति अथवा जनगणना के आधार पर विभाजित कर उत्तराखण्ड राज्य के अनुमान तैयार किये गये थे। किन्तु नये आधार वर्ष में विभिन्न विभाग से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग कर नियमानुसार अनुमान तैयार किये गये हैं। नई श्रृखला के अनुमान तैयार करने में कुछ बिन्दुओं को समाहित किया गया है, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति का सार्थक विश्लेषण किया जा सके। अतः नई श्रृंखला के अनुमानों तथा पूर्व श्रृखला के अनुमानों में भिन्नता होना स्वभाविक है।

तालिका 1 : राज्य के गठन के पश्चात् राज्य की अर्थव्यवस्था के घटकों में परिवर्तन (स्थिर मूल्यों पर)

अर्थव्यवस्था के घटक	2000-01	2005-06
प्राथमिक क्षेत्र	30.99	22.66
द्वितीयक क्षेत्र	18.55	27.99
तृतीयक क्षेत्र	50.46	49.36

उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के पश्चात् राज्य की अर्थव्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। संलग्न तालिका को देखने से पता चलता है कि प्राथमिक क्षेत्र जिसमें वन, कृषि, मत्स्य तथा खनन सम्मिलित है सकल राज्य घरेलू उत्पाद में योगदान वर्ष 2000–01 में 30.99 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2005–06 में 22.66 प्रतिशत हो गया है वही दूसरी ओर द्वितीयक क्षेत्र जिसके अन्तर्गत विनिर्माण, निर्माण, विद्युत गैस एवं जल सम्पूर्ति है के योगदान में काफी तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। यह वर्ष 2000–01 में 18.55 प्रतिशत था से बढ़कर में वर्ष 2005–06 में 27.99 प्रतिशत हो गया है। जबकि सेवा क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान में कमी आयी है। यह वर्ष 2000–01 में 50.46 प्रतिशत था तथा वर्ष 2005–06 में यह घटकर 49.36 प्रतिशत है। सकल राज्य घरेलू उत्पाद के घटकों में यह परिवर्तन राज्य की अर्थव्यवस्था में हुए विकास से जुड़ा हुआ है तथा विकास की दिशा को दर्शाता है।

अतः यह स्पष्ट है कि राज्य के निर्माण के पश्चात् राज्य की अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार एवं वृद्धि हुई है। अर्थव्यवस्था की इस वृद्धि का बनाये रखने के लिए राज्य को अवस्थापना सुविधा पर विशेष ध्यान रखना होगा। उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि राज्य इस क्षेत्र में विशेष ध्यान दे रहा है तथा इस क्षेत्र में (द्वितीयक क्षेत्र) तीव्रता से वृद्धि कर रहा है, जो कि स्वस्थ आर्थिक विकास का द्योतक है।

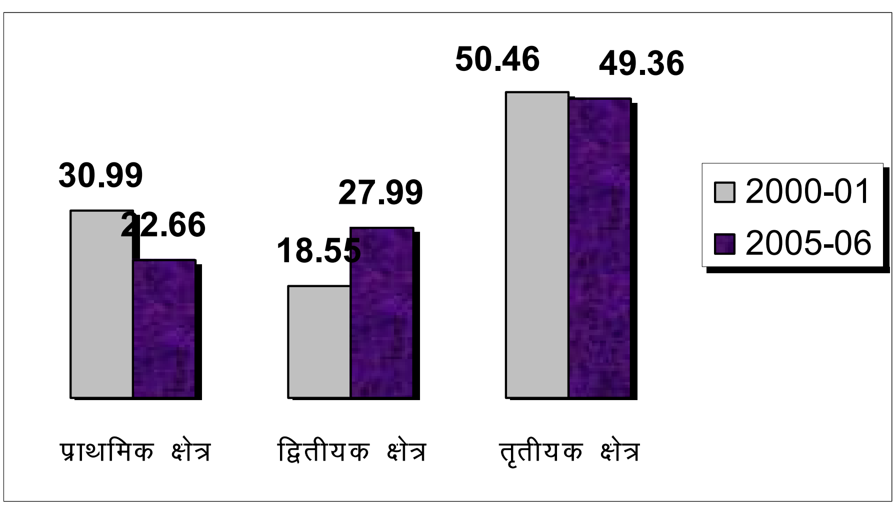

राज्य की अर्थव्यवस्था में आयी वृद्धि के लिए राज्य द्वारा दिये गये औद्योगिक पैकेज का भी विशेष योगदान है जिसके कारण औद्योगिक क्षेत्र का राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है तथा यह 18.55 प्रतिशत से बढ़कर 27.99 प्रतिशत हो गया है। सकल घरेलू उत्पाद की उच्च वृद्धि दर को भविष्य में भी बनाये रखना होगा। यदि राज्य द्वारा विश्व स्तरीय अवस्थापना सुविधाएं प्रदान की जाती है तो सकल घरेलू उत्पाद की इस उच्च वृद्धि को बनाये रखा जा सकता है। इस दिशा में राज्य द्वारा प्रयास किये जा रहे है तथा सड़कों के लिए राज्य सरकार द्वारा ए0डी0बी0 सहायतित योजना शुरू की जा रही है। इसी प्रकार प्रमुख शहरों को सड़कों से जोड़ा जा रहा है तथा रोड़ नटवर्क का विस्तार किया जा रहा है। हवाई पट्टियों का निर्माण एवं विस्तारीकरण किया जा रहा है। आई0 टी0 पार्क स्थापित किये जा रहे है। राज्य में औद्योगिक इकाइयों को पर्याप्त मात्र में बिजली की आपूर्ति हो इसके लिए भी राज्य द्वारा प्रयत्न किया जा रहा है तथा ऊर्जा क्षेत्र में भी सुधार किया जा रहा है।

राज्य आय अथवा घरेलू उत्पाद किसी भी राज्य के आर्थिक विकास का सर्वमान्य मापदन्ड है। उत्तराखण्ड राज्य सृजन के पूर्व वर्ष 1994–95 से 1999–2000 तक की अवधि में उत्तराखण्ड में विकास की औसत दर अपेक्षाकृत काफी कम तथा अस्थिर रही है। जबकि राज्य सृजन के उपरान्त वर्ष 2000–01 से 2004–05 की अवधि में विकास की औसत दर अपेक्षाकृत अच्छी रही है। सकल/ निवल राज्य घरेलू उत्पाद तथा वृद्धि दर परिशिष्ट एक से छः में दिये गये हैं। सकल राज्य घरेलू उत्पाद के वर्ष 1999–00 से 2004–05 के पुनरीक्षित अनुमान, 2005–06 के त्वरित अनुमान, 2006–07 हेतु अग्रिम अनुमान दर्शाए गए हैं।

उत्तराखण्ड राज्य के सकल राज्य घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर नई श्रृंखला 1999–2000 तथा पुरानी श्रृंखला 1993–94 के मूल्यों पर निम्न तालिकाओं में दर्शायी जा रही है।

तालिका 2 : वृद्धि दर सकल राज्य घरेलू उत्पाद (स्थिर मूल्यों पर नई श्रृंखला 1999–00)

घटक	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
प्राथमिक क्षेत्र	4.10	-4.75	2.84	9.20	3.73	4.71
द्वितीयक क्षेत्र	30.12	13.37	21.40	5.60	15.25	14.49
तृतीयक क्षेत्र	9.86	7.98	7.51	8.13	6.01	10.69
योगः–	**11.83**	**5.48**	**9.52**	**7.74**	**7.78**	**10.28**

तालिका 3 : वृद्धि दर सकल राज्य घरेलू उत्पाद (स्थिर मूल्यों पर पुरानी श्रृंखला 1993–94)

घटक	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
प्राथमिक क्षेत्र	2.54	-1.59	2.48	12.25	2.71	2.23
द्वितीयक क्षेत्र	24.40	14.58	19.75	7.58	20.35	19.27
तृतीयक क्षेत्र	11.53	7.59	10.53	14.06	12.89	11.95
योगः–	**10.71**	**5.94**	**10.16**	**11.76**	**11.69**	**11.24**

प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से उत्तराखण्ड राज्य की प्रतिव्यक्ति औसत आय राष्ट्रीय औसत से कम है तथा आय का राष्ट्र की प्रति व्यक्ति औसत आय से अंतर भी बढ़ रहा है। इससे प्रतीत होता है कि देश में हुयी आर्थिक प्रगति का पूरा–पूरा लाभ राज्य को नहीं मिल पा रहा है।

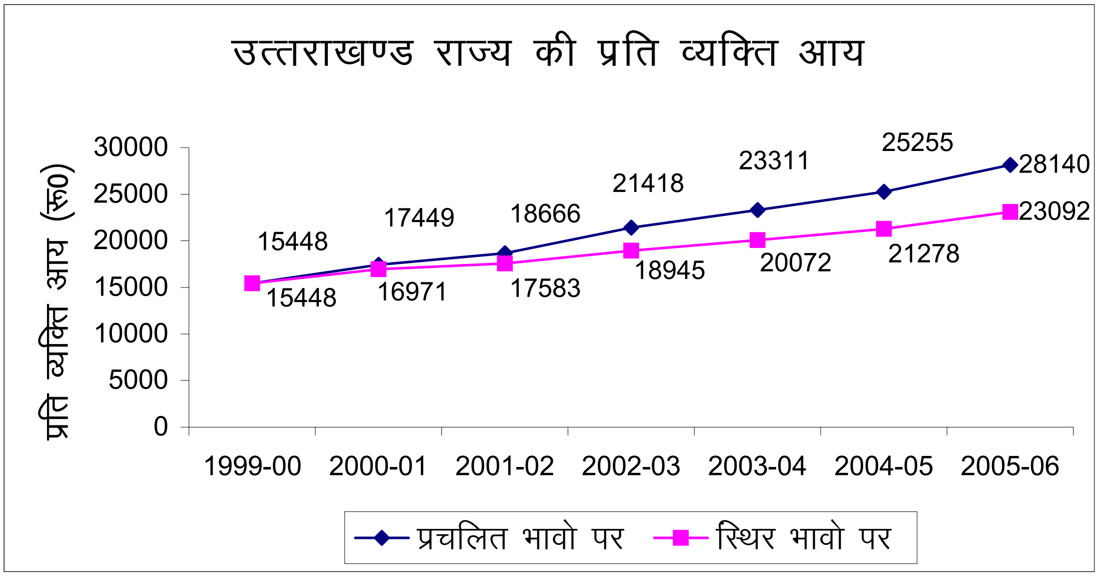

राजकोषीय परिदृश्य एवं मध्यकालिक राजकोषीय प्रारूप

राज्य के गठन के पश्चात् राज्य की वित्तीय स्थिति में काफी उतार चढाव रहा है, निम्न तालिका से राज्य की वर्ष 2001–02 से 2008–09 तक की वित्तीय स्थिति की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं:–

तालिका 4 : वित्तीय स्थिति की प्रवृत्तियाँ

(प्रतिशत)

मद	2001–02	2002–03	2003–04	2004–05	2005–06	2006–07 वास्तविक आँकड़ें	2007–08 पुनरीक्षित अनुमान	2008–09 बजट अनुमान
राजस्व घाटा/राजस्व प्राप्ति	3.65	14.21	21.15	23.26	1.34	-12.16	-11.95	-17.16
राजस्व घाटा/राजकोषीय घाटा	23.49	51.45	54.11	43.76	3.94	-101.20	-68.88	-155.29
वेतन+पेंशन +ब्याज/ राजस्व प्राप्ति	66.07	73.05	69.03	70.40	57.20	44.47	46.91	45.66
वेतन+पेंशन/ स्वयं का राजस्व	123.36	128.99	118.28	103.44	96.91	73.23	83.53	87.76

ब्याज / राजस्व प्राप्ति	18.37	17.18	16.58	19.96	14.58	13.08	12.82	11.94
राजस्व प्राप्ति / स0रा0घ0उ0	17.07	17.23	17.42	17.95	21.48	24.68	26.81	26.12
स्वकर / स0रा0 घ0उ0	5.59	5.46	5.93	6.34	6.92	8.41	8.36	7.79
केन्द्रीय अन्तरण / स0रा0घ0उ0	10.47	9.77	9.69	9.20	12.04	14.10	15.87	16.09
राजस्व व्यय / स0रा0घ0उ0	17.69	19.68	21.10	22.12	21.77	21.68	23.60	21.64
राजस्व घाटा / स0रा0घ0उ0	0.62	2.45	3.68	4.17	.29	-3.00	-3.20	-4.48
राजकोषीय घाटा / स0रा0घ0उ0	2.65	4.76	6.81	9.94	7.29	2.96	4.65	2.89
ऋण / स0रा0घ 0उ0	27.67	30.87	38.85	44.07	43.98	40.65	37.88	35.12

राजकोषीय सुधार पथ–

उत्तराखण्ड राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबन्धन अधिनियम के प्राविधान तथा 12वें वित्त आयोग की संस्तुतियों के क्रम में राज्य सरकार द्वारा अपना राजकोषीय सुधार पथ तैयार किया गया है। इसके अन्तर्गत वर्ष 2008–09 तक राजस्व घाटे को समाप्त किया जाना है तथा सकल राजकोषीय घाटे को सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 3 प्रतिशत के स्तर तक लाना है। इस प्रकार उत्तराखण्ड राज्य के लिए राजस्व एवं राजकोषीय घाटे के पूर्वानुमान निर्धारित किये गये हैं।

मध्यकालिक राजकोषीय प्रारूप परिशिष्ट–7 तथा सकल राज्य घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में परिशिष्ट–8 संलग्न है। इस प्रारूप में उत्तराँचल राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबन्धन अधिनियम, 2005 में दिए गए लक्ष्यों को अगले 3 वर्षों में वार्षिक लक्ष्यों में अपघटित किया गया है। लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु रणनीति में राजस्व प्राप्तियों में राजस्व व्यय की तुलना में अधिक वृद्धि दर सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है। राजस्व व्यय के अन्तर्गत वेतनेतर संचालन एवं अनुरक्षण व्यय में वृद्धि, प्रशासनिक व्यय पर नियंत्रण तथा गैर–मेरिट सब्सिडी पर नियंत्रण का लक्ष्य रखा गया है।

इस प्रकार राजकोषीय सुधार की रणनीति के दो मुख्य घटक हैं– राज्य के स्वयं के राजस्व में अभिवृद्धि तथा अनुत्पादक व्यय पर नियंत्रण, पूँजी निवेश में वृद्धि एवं संचालन तथा अनुरक्षण व्यय में वृद्धि के माध्यम से लोक व्यय की संरचना में सुधार लाना। उच्च प्राथमिकता वाले विकास व्यय का संरक्षण एवं उसमें वृद्धि लोक व्यय की

संरचना में सुधार की रणनीति का अनिवार्य अंग है ताकि लोक व्यय विकासोन्मुखी हो सके।

निम्न तालिका 5 में वर्ष 2003—04 से वर्ष 2011—12 तक के अनुमान तथा प्रक्षेपित अनुमान दिए गए हैं जिससे यह स्पष्ट है कि वर्ष 2008—09 में सकल राजकोषीय घाटा, राज्य सकल घरेलू उत्पाद के 3 प्रतिशत तथा वर्ष 2011—12 में 3 प्रतिशत से कम हो जाएगा। निम्न ग्राफ 3.1 में राजस्व एवं राजकोषीय घाटे की प्रवृत्तियों को दर्शाया गया है। यह राजकोषीय सुधार कार्यक्रम राज्य की अर्थ व्यवस्था में विकास के महत्वाकाँक्षी लक्ष्यों पर आधारित है।

तालिका 5 : राजस्व एवं राजकोषीय घाटा के प्रवृत्ति एवं पूर्वानुमान

	2003—04 वास्तविक	2004—05 वास्तविक	2005—06 वास्तविक	2006—07 वास्तविक	2007—08 पुनरीक्षित	2008—09 बजट अनुमान	2009—10 प्रक्षेपित	2010—11 प्रक्षेपित	2011—12 प्रक्षेपित
राजस्व घाटा (राज्य सकल घरेलू उत्पाद के साथ प्रतिशत)	761.34 (3.68)	950.14 (4.17)	73.95 (.29)	—896.38 (—3.00)	—1106.71 (—3.20)	—1794.03 (—4.48)	—1656.90 (—3.53)	—1991.50 (—3.69)	—2431.70 (—3.92)
सकल राजकोषीय घाटा (राज्य सकल घरेलू उत्पाद के साथ प्रतिशत)	1407.14 (6.81)	2171.42 (9.54)	1878.23 (7.29)	885.77 (2.96)	1606.66 (4.65)	1155.30 (2.89)	1400.42 (2.99)	1548.20 (2.87)	1510.73 (2.44)

ग्राफ 3.1 : राजस्व एवं राजकोषीय घाटे की प्रवृत्ति

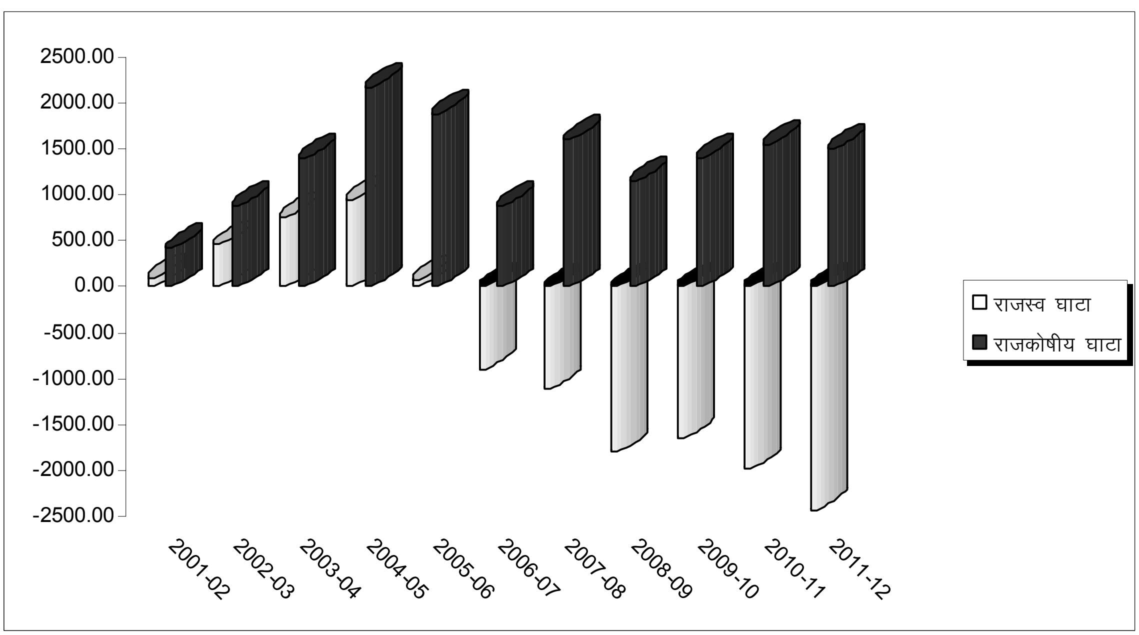

राजस्व लेखा– राज्य के राजस्व लेखे में राज्य के गठन के बाद प्राप्तियों तथा भुगतान के मद में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। राज्य का स्वयं का कर राजस्व वर्ष 2001–02 में रु0 894.70 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2008–09 में लगभग रु0 3119.76 करोड़ अनुमानित है। इसी प्रकार राज्य का करेत्तर राजस्व वर्ष 2001–02 में रु0 162.13 से बढ़कर वर्ष 2008–09 में रु0 897.23 करोड़ अनुमानित है। इस प्रकार राज्य द्वारा राज्य गठन के पश्चात् सात वर्ष की अवधि में अपने स्वयं के संसाधनों में लगभग तीन गुना से अधिक वृद्धि की है। केन्द्र सरकार से प्राप्त होने वाली धनराशि भी वर्ष 2001–02 में रु0 1676. 14 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2008–09 में रु0 6439.56 करोड़ अनुमानित है। वर्ष 2008–09 के आय व्ययक में कुल राजस्व प्राप्तियॉ रु0 10456.56 करोड़ अनुमानित है तथा कुल राजस्व व्यय लगभग रु0 8662.53 करोड़ अनुमानित है।

ग्राफ 3.2 : राजस्व लेखे की प्रवृत्तियाँ

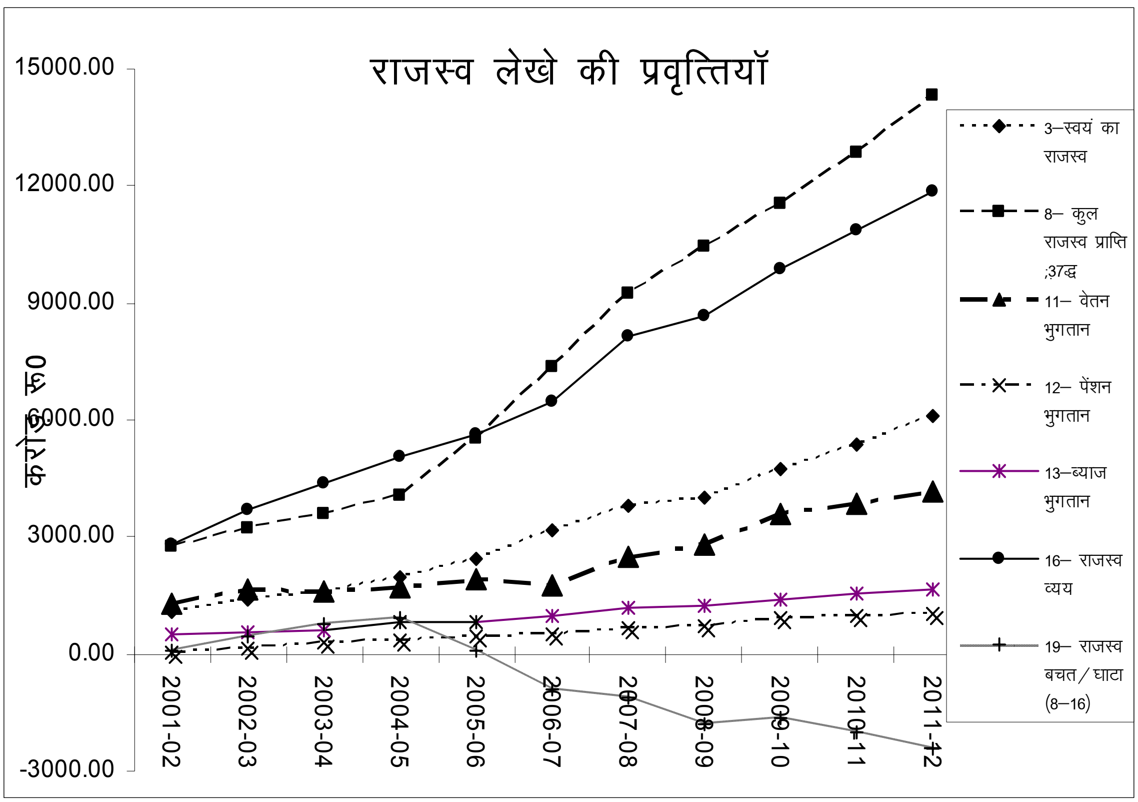

उपरोक्त ग्राफ से राज्य की राजस्व आय एवं प्रमुख राजस्व व्यय की मदों की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट होती हैं।

राज्य की स्वयं की राजस्व प्राप्तियों का अधिकांश भाग वेतन+पेंशन+ब्याज में व्यय होता है। जो राजस्व प्राप्तियों के प्रतिशत के रूप में वर्ष 2001–02 में 66.07 प्रतिशत, वर्ष 2002–03 73.05 प्रतिशत, वर्ष 2003–04 में 69.03 प्रतिशत, वर्ष 2004–05 में 70.40 प्रतिशत वर्ष 2005–06 में 57.20 प्रतिशत, वर्ष 2006–07 में 44.47 प्रतिशत है।

वर्ष 2008—09 के आय—व्ययक में 2007—08 के पुनरीक्षित अनुमान के सापेक्ष लगभग 1.25 प्रतिशत की कमी परिलक्षित हो रही है।

ग्राफ 3.3 : राजस्व व्यय की प्रवृत्तियाँ

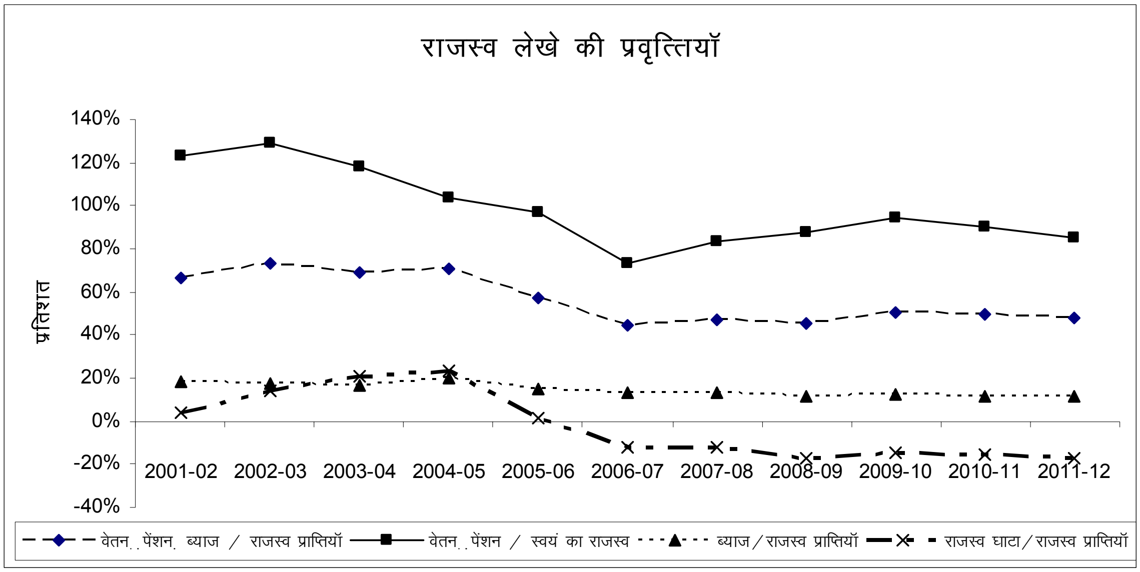

राजस्व घाटा— राज्य का राजस्व घाटा वर्ष 2002—03 में रु0 457.26 करोड़, वर्ष 2003—04 में रु0 761.34 करोड़, वर्ष 2004—05 में रु0 950.14 करोड, वर्ष 2005—06 में रू0 73.95 करोड़ तथा वर्ष 2006—07 में रू0 896.38 करोड का राजस्व अधिशेष आ रहा है। वर्ष 2007—08 के पुनरीक्षित अनुमानों राजस्व अधिशेष रु0 1106.71 करोड़ रहा है तथा वर्ष 2008—09 के आय—व्ययक अनुमान में रु0 1794.03 करोड़ सरप्लस अनुमानित है। वर्ष 2009—10 तथा इसके बाद के वर्षों में भी राजस्व सरप्लस होना अनुमानित है।

राजकोषीय घाटा— राजकोषीय घाटा वर्ष 2002—03 में रु0 888.82 करोड़, वर्ष 2003—04 में रु0 1407.14 करोड़, वर्ष 2004—05 में रु0 2171.42 करोड़, वर्ष 2005—06 में रू0 1878.23 करोड़, वर्ष 2006—07 में रू0 885.77 करोड तथा वर्ष 2007—08 के पुनरीक्षित अनुमानों में रु0 1606.66 करोड़ होना अनुमानित है। राजकोषीय घाटे को वर्ष 2008—09 तक सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 3 प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य रखा गया है। अतः वर्ष 2008—09 में राजकोषीय घाटा रु0 1155.30 करोड़ व वर्ष 2009—10 के अनुमानों में रु0 1400.42 करोड़ तथा वर्ष 2010—11व 2011—12 में क्रम ाः रु0 1548. 20 व रु01510.73 करोड तक लाने का लक्ष्य है। राजकोषीय घाटा/ सकल राज्य घरेलू उत्पाद अनुपात में वर्ष 2001—02 से वर्ष 2004—05 तक की अवधि में निरन्तर वृद्धि हुई है, वर्ष 2005—06 व वर्ष 2006—07 से इसमें कमी परिलक्षित हो रही है। वर्ष 2007—08 व आगामी वर्षो में इसे कम किया जाना प्रस्तावित है। वर्ष 2001—02 में यह अनुपात 2.65 प्रतिशत था जो वर्ष 2004—05 में बढ़कर 9.54 प्रतिशत हो गया है तथा

वर्ष 2006–07 में यह पुनः घटकर 2.96 प्रतिशत हो गया है तथा वर्ष 2007–08 के पुनरीक्षित अनुमानों में यह 4.65 प्रतिशत अनुमानित है। राजस्व घाटा/राजकोषीय घाटा अनुपात वर्ष 2001–02 में 23.49 प्रतिशत, 2002–03 में 51.45 प्रतिशत, 2003–04 में 54.11 प्रतिशत, 2004–05 में 43.76 प्रतिशत, 2005–06 में 3.94 प्रतिशत, 2006–07 में (–)101.20 प्रतिशत रहा है तथा वर्ष 2007–08 में संशोधित अनुमानों में लगभग (–)68.88 प्रतिशत तक होना अनुमानित है। वर्ष 2005–06 से राजस्व घाटा अनुदान प्राप्त होने के कारण इसमें गिरावट आई है। राजस्व घाटा/ राजकोषीय घाटा अनुपात राज्य की शुद्ध ऋण प्राप्तियों के उस अंश को इंगित करता है जिसका प्रयोग राजस्व घाटे की प्रतिपूर्ति हेतु किया जाता है। राजस्व घाटा/राजकोषीय घाटा अनुपात वर्ष 2008–09 में लगभग 155.29 प्रतिशत ऋणात्मक होने और उसके बाद के वर्षो में भी ऋणात्मक होने का अनुमान है।

पूँजीगत परिव्यय– निम्न तालिका 6 में पूॅजीगत परिव्यय में पिछले वर्षो के पूॅजीगत परिव्यय का विवरण दिया गया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि इसमें लगातार वृद्धि हो रही है। पूॅजीगत परिव्यय/ राजकोषीय घाटा अनुपात . ऋण प्राप्तियों के उस अंश को इंगित करता है जिसका उपयोग पूॅजीगत आस्तियों के सृजन पर किया जाता है।

तालिका 6 : पूॅंजीगत परिव्यय की प्रवृत्तियॉ

	2001–02	2002–03	2003–04	2004–05	2005–06	2006–07	2007–08 पुनरीक्षित
पूॅजीगत परिव्यय (करोड़ रु0 में)	308.65	338.84	533.31	1127.36	1705.43	1699.26	2606.86
पूॅजीगत परिव्यय/ कुल व्यय	8.31	5.66	8.06	15.62	21.54	18.49	22.63
पूॅजीगत परिव्यय/ राजकोषीय घाटा(प्रतिशत)	72.76	38.12	37.90	51.52	90.80	191.84	162.25

राज्य की ऋण ग्रस्तता– राज्य के गठन के समय ही काफी बड़ी धनराशि ऋण के रूप में राज्य को प्राप्त हुई है। इसके उपरान्त भी राज्य की ऋण ग्रस्तता में निरन्तर वृद्धि हुई है। वर्ष 2001–2002 में जहॉ राज्य की ऋण ग्रस्तता रु0 4430.04 करोड़ थी वह 2007–08 में बढ़कर रु0 13087.05 करोड़ होना अनुमानित है। ग्राफ–3.4 में राज्य का राजकोषीय घाटा, ऋण ग्रस्तता तथा ऋण सेवा के वर्ष 2001–02 से वर्ष 2006–07 तक के वास्तवित आंकड़े, वर्ष 2007–08 का पुनरीक्षित अनुमान तथा वर्ष 2011–12 तक के पूर्वानुमान दिये गये हैं।

ग्राफ–3.4 : राजकोषीय घाटा, ऋणग्रस्तता एवं ऋण सेवा की प्रवृत्ति

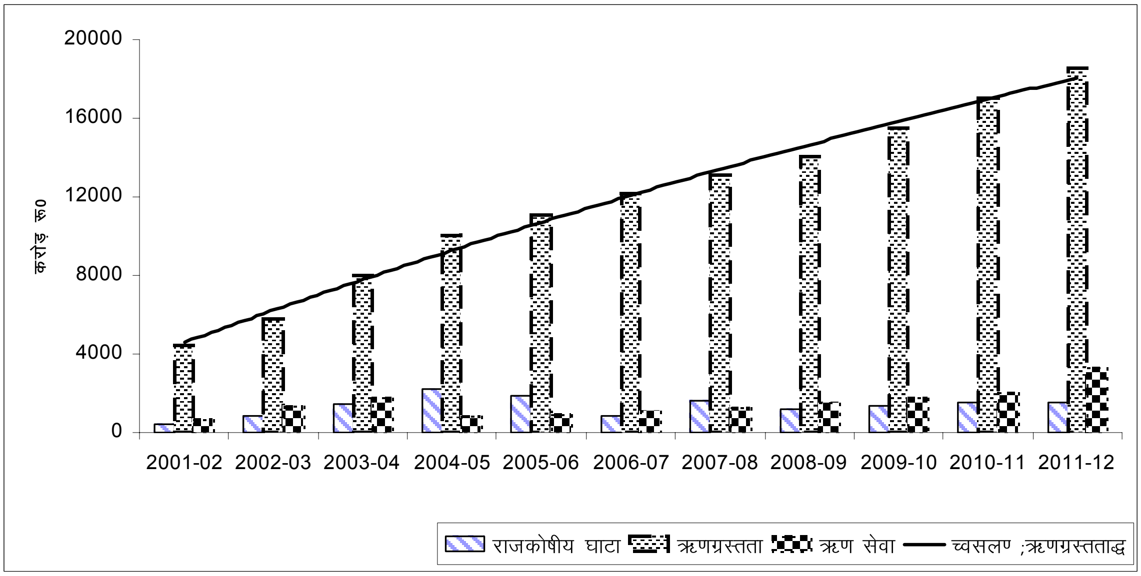

ग्राफ–3.5 में राज्य का राजकोषीय घाटा/ सकल राज्य घरेलू उत्पाद, ऋण ग्रस्तता /सकल राज्य घरेलू उत्पाद, ऋण सेवा/ राजस्व प्राप्तियॉ तथा राजस्व घाटा/ राजकोषीय घाटा के वर्ष 2006–07 तक के वास्तविक आंकड़े तथा वर्ष 2007–08 के पुनरीक्षित अनुमान एवं वर्ष 2011–12 तक के पूर्वानुमान दिये गये हैं।

ग्राफ–3.5 : सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा, ऋणग्रस्तता व ऋण सेवा की प्रवृत्ति

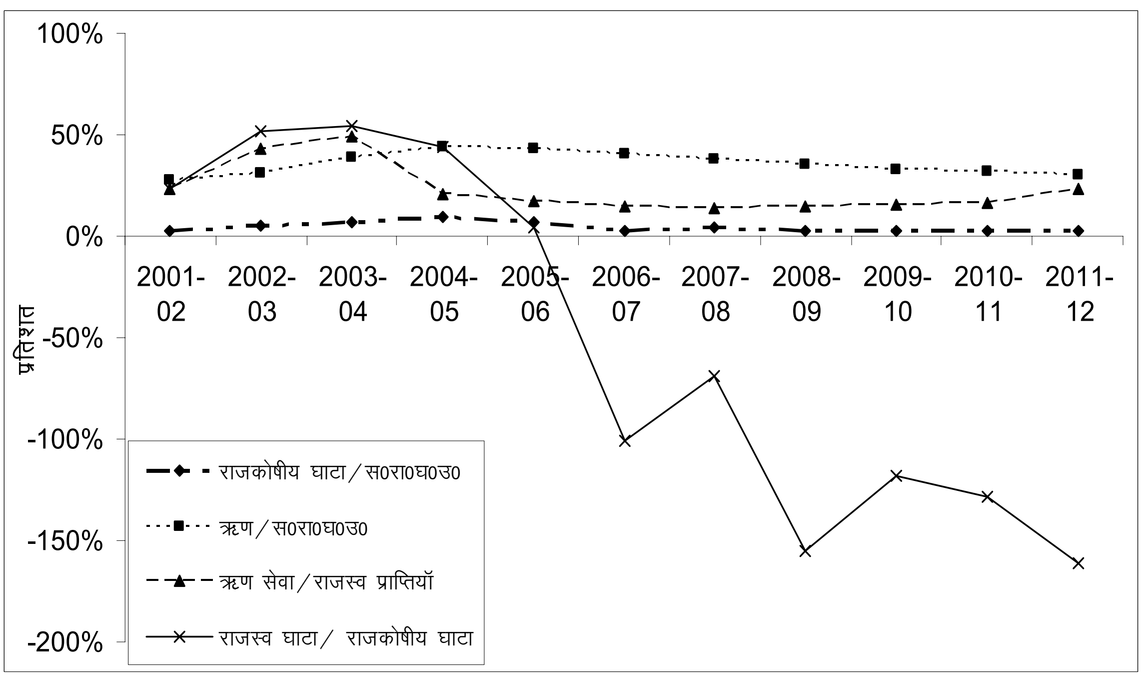

वित्तीय वर्ष 2006–07 के राजकोषीय परिणाम

वित्तीय वर्ष 2006–07 में मूल आय–व्ययक अनुमान में प्रदर्शित राजस्व घाटा रु0 155.71 करोड़ था जो वास्तविक आँकड़ों के अनुसार रु0 896.38 करोड़ सरप्लस रहा। इसी प्रकार मूल आय–व्ययक अनुमान में प्रदर्शित राजकोषीय घाटा रु0 2837.58 करोड़ के सापेक्ष रु0 885.77 करोड़ वास्तविक आँकड़ों के अनुसार रहा। यह भी उल्लेखनीय है कि राज्य के स्वयं का कर राजस्व जो रु0 1784.69 करोड़ अनुमानित था के सापेक्ष रु0 2513.78 करोड़ वास्तविक प्राप्तियाँ रही, इसी प्रकार राज्य के करेत्तर राजस्व के अनुमानित प्राप्तियाँ रु0 784.11 करोड़ के सापेक्ष वास्तविक प्राप्तियाँ रु0 646.82 करोड़ रही है। इस प्रकार राज्य सरकार के सकारात्मक प्रयासों के फलस्वरूप राजस्व घाटे तथा राजकोषीय घाटे में कमी परिलक्षित हो रही है।

———— :0 0: ————